

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 93वें जन्मजयंती (शरदपूर्णिमा महोत्सव-
2026) के अन्तर्गत तीर्थक्षेत्र वंदना महोत्सव (26 सितम्बर-भाद्रपद शु. पूर्णिमा से
22 अक्टूबर, आश्विन शु. 11 तक) के अवसर पर प्रस्तुत

चैतन्य तीर्थ श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

-स्थापना (शेर छंद)

तीरथ बना बनाके जो खुद तीर्थ बन गई।
जिनधर्म की जीवन्त सच्ची कीर्ति बन गई॥
चैतन्य तीर्थ गणिनी ज्ञानमती मात हैं।
पूजन करूँ इनकी तो आते तीर्थ याद हैं॥1॥

-दोहा-

तीर्थक्षेत्र उद्धारिका, तीर्थस्वरूपा मात।
गणिनीप्रमुख महान हैं, ज्ञानमती जी मात॥2॥
आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पुनः अष्ट द्रव्यादि ले, पूजन करूँ महान॥3॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमातः! अत्र अवतर
अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमातः! अत्र तिष्ठ
तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमातः! अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् स्थापनं।

-अष्टक-

तर्ज-ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला है.....

पूजन की बेला आई है, ज्ञानमति माताजी की।
पूजन की थाली सजाई है, ज्ञानमती माताजी की॥1॥
तीर्थों की नदियों से जल भर के, माता के पद में जलधार कर लें।
पूजन की शुभ घड़ी आई है, ज्ञानमति माताजी की॥1॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे जन्मजरामृत्यु-
विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन में कर्पूर घिस के मिलाऊँ, चैतन्य तीरथ के पद में लगाऊँ।

पूजन की शुभ घड़ी आई है, ज्ञानमति माताजी की॥2॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे संसारताप-
विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत में मोती के पुंज मिलाऊँ, चैतन्य तीरथ के सम्मुख चढ़ाऊँ।

पूजन की शुभ घड़ी आई है, ज्ञानमति माताजी की॥3॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अक्षयपद-
प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत तीरथ के पुष्प मंगाऊँ, चैतन्य तीरथ के सम्मुख चढ़ाऊँ।

पूजन की शुभ घड़ी आई है, ज्ञानमति माताजी की॥4॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे कामबाण-
विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नमकीन मीठे व्यंजन बनाऊँ, चैतन्य तीरथ के सम्मुख चढ़ाऊँ।

पूजन की शुभ घड़ी आई है, ज्ञानमति माताजी की॥5॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे क्षुधारोग-
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तो आरती उतारूँ रे, ज्ञानमती माता की,

जय जय माँ ज्ञानमती जय जय जय-2

ये तो प्राचीन तीर्थों का, उद्धार करवाती हैं। उद्धार.....

जहाँ कोई नहीं जाता, वहाँ ये जाती हैं। वहाँ ये....

तीर्थ का विकास करें, तीर्थ में प्रकाश भरें,

खुद भी हैं तीरथ सी.....हाँ ये तो खुद भी हैं तीरथ सी

मैं तो आरती उतारूँ रे, ज्ञानमती माता की,

जय जय माँ ज्ञानमती, जय जय जय-2॥6॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे मोहान्धकार-
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मात पद वंदन कर लो रे-2

सुरभित मलयगिरि की धूप खेकर अर्चन कर लो रे

मात वन्दन कर लो रे-2॥10॥

रत्नत्रय धारण करके, आत्मा को तीर्थ बनाया।

फिर कल्याणक तीर्थों को, विकसित कर कीर्ति बढ़ाया॥

तीर्थ के पद में नम लो रे-2,

चैतन्य तीरथ श्री ज्ञानमति माता को नमन कर लो।

मात पद वन्दन कर लो रे-2॥7॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अष्टकर्म-
दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव श्रीफल ले, चैतन्य तीर्थ को चढ़ाऊँ।

रत्नत्रय धारण करके, आत्मा की कीर्ति बढ़ाऊँ।।

तीर्थ के पद में नम लो रे-2

चैतन्य तीर्थ श्री ज्ञानमति माता को नमन कर लो।

मात पद वन्दन कर लो रे-2॥8॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे मोक्षफल-
प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-आई है स्वर्ण जयंती.....

लाए हैं अर्घ्य की थाली, गुरु पद में चढ़ाने को।

आए हैं शरण तिहारी, ज्ञान के रज कण पाने को।।

चैतन्य तीर्थ गणिनी माता श्री ज्ञानमती जी हैं-श्री ज्ञानमती माताजी जी हैं।

जो प्रभु के पंचकल्याणक तीर्थ सजाकर देती हैं-तीर्थ सजाकर देती हैं।।

इसलिए अर्घ्य लाए हैं-2, गुरुपद में चढ़ाने को।

आए हैं शरण तिहारी, ज्ञान के रजकण पाने को॥9॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे अनर्घ्यपद-
प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः॥

जयमाला

तर्ज-जिस गली में.....

चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।

पड़ गई दृष्टि जिस तीर्थ पर मात की,

कोटि दृष्टी में वे छा गए देश की॥चल पड़े....॥10॥

मुक्तिपथ पर चली जब वो कच्ची कली,

फूल बन बालसतियों की बगिया खिली। फूल बन.....

क्वारी कन्याओं के खुल गए रास्ते,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के॥ चल पड़े.....॥11॥

लेखनी ने लिखे सैकड़ों ग्रंथ जब,

अन्य माताओं ने भी लिखे ग्रंथ तब॥ अन्य माताओं.....

ज्ञानज्योति के अब खुल गए रास्ते,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के॥ चल पड़े.....॥2॥

तीर्थ उद्धार की प्रेरिका बन गई,

मंत्र 'अर्हम्*' की ये देशना बन गई। मंत्र अर्हम्.....

दे गई नव कृती रास्ते रास्ते,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के॥ चल पड़े.....॥3॥

इन्द्रध्वज पूजा की तुमने रचना किया,

उसका स्वर्णिम महोत्सव भी है मन गया॥ उसका....

हर नगर इन्द्रध्वज पूजा करने लगा,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के॥ चल पड़े.....॥4॥

अर्घ्य अर्पण करूँ गाके जयमाल को,

ज्ञानमति गणिनी माता की गुणमाल को। ज्ञानमति.....

तीर्थ शाश्वत अयोध्या किया है चमन,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के॥ चल पड़े.....॥5॥

“चन्दनामति” ये चैतन्य तीर्थ बनीं,

जैन संस्कृति की सर्वोच्च कीरत बनीं। जैन.....

भक्त इनके सदा भक्ति में नाचते,

कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के॥ चल पड़े.....॥6॥

ॐ ह्रीं चैतन्यतीर्थ तीर्थोद्धारिका गणिनीप्रमुखश्रीज्ञानमतीमात्रे
जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः॥

तर्ज-परदेसी, परदेसी.....

वन्दामि, वन्दामि, करते हैं हम, चरण में तेरे, माँ चरण में तेरे।

चरणों में तेरे माता, शीश झुकाएं, शीश झुकाके करें भक्ति से नमन॥

वंदामि.....॥ टेक.॥

हर दिन नया, तेरे जीवन का होता है-होता है।

नित्य नई निर्माण प्रेरणा देता है-2॥

सर्वदा सृजन की, तेरी खिरती है वाणी॥ वंदामि.....॥1॥

॥ इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ॥

* अयोध्या का 'अ', राजधानी दिल्ली का 'र', हस्तिनापुर का 'ह' एवं मांगीतुंगी का 'म', ऐसे सब तीर्थों के उद्धार से आप अर्हम् मंत्र का स्वरूप बन गई।